सेवा संगठन संस्कार

भारतीय सिंधू सभा

जलगांव शाखा

राष्ट्रीय प्रतिनिधी सभा जलगांव

हुंकार

BSS

8, 9 जुलाई 2017

जोति मा जोति जले

अपना समाज यह निरंतरता, समर्पण और सेवा का पालन करने वाले लोगों के बलपर खडा है।

–भवरलाल जैन

कृषी साधक

हुंकार बुधी सिंधी आहे जाग़ियो, सिंधीयत पाइन्दी वरी ओज़ साग़ियो ।

संदेश

''धन्य करेंगे इस जीवन को, बेहतर बनाकर इस जगत को ।''
– भवरलाल जैन

अशोक भवरलाल जैन

दि. २७ जून २०१७

आपके भारतीय सिंधू सभा, जलगांव शाखा की ओर से राष्ट्रीय प्रतिनिधी सभा के आयोजन की आनंदवार्ता ज्ञात हुई । परिवर्तनशील समाज की दृष्टी से ऐसी सभा–संगोष्टी की बहुत आवश्यकता है । आपके द्वारा किए जा रहे इस महान कार्य का हमें अत्यानंद है ।

संगोष्टी के लिए अनेक शुभकामनाएँ ।

भवदीय

अशोक जैन

८/९, जैन हाऊस, सुयोग कॉलनी, जलगांव ४२५००१ (भारत) दूरभाष : +९१-२५७-२२२००९५-९९ फैक्स : +९१-२५७-२२२११९९, इ-मेल : शेहेझऽक्षरळपी.लेा

मोठे भाऊ - भवरलाल हिरालाल जैन

किसानो के जीवन के मायने बदलनेवाले भाऊ

भवरलाल हिरालाल जैन अर्थात हम सबके बडे भाऊ । वे बहुआयामी के धनी थे । किसान, उद्योजक, सामाजिक कार्यकर्ता, पर्यावरणवादी, लेखक, जानदेनेवाला दोस्त और असंख्य जीवो को नयी दृष्टी प्रदान करनेवाला संवेदनशील व्यक्ति । हम सबको विशेषता किसानो की जिंदगी को उन्होने ढाला, आकार दिया । जीने के लिए नया विचार दिया । हमारा जीवन बेहतर बनाने के लिइ उनसे हमे जो भी मिला उसके लिए हम सब हमेशा कृत्तज्ञ रहेंगे । भाऊने अपने अखंड जीवनकाल की तपश्चर्यासे किसानोके जीवन के मायनेही बदल दिय.....

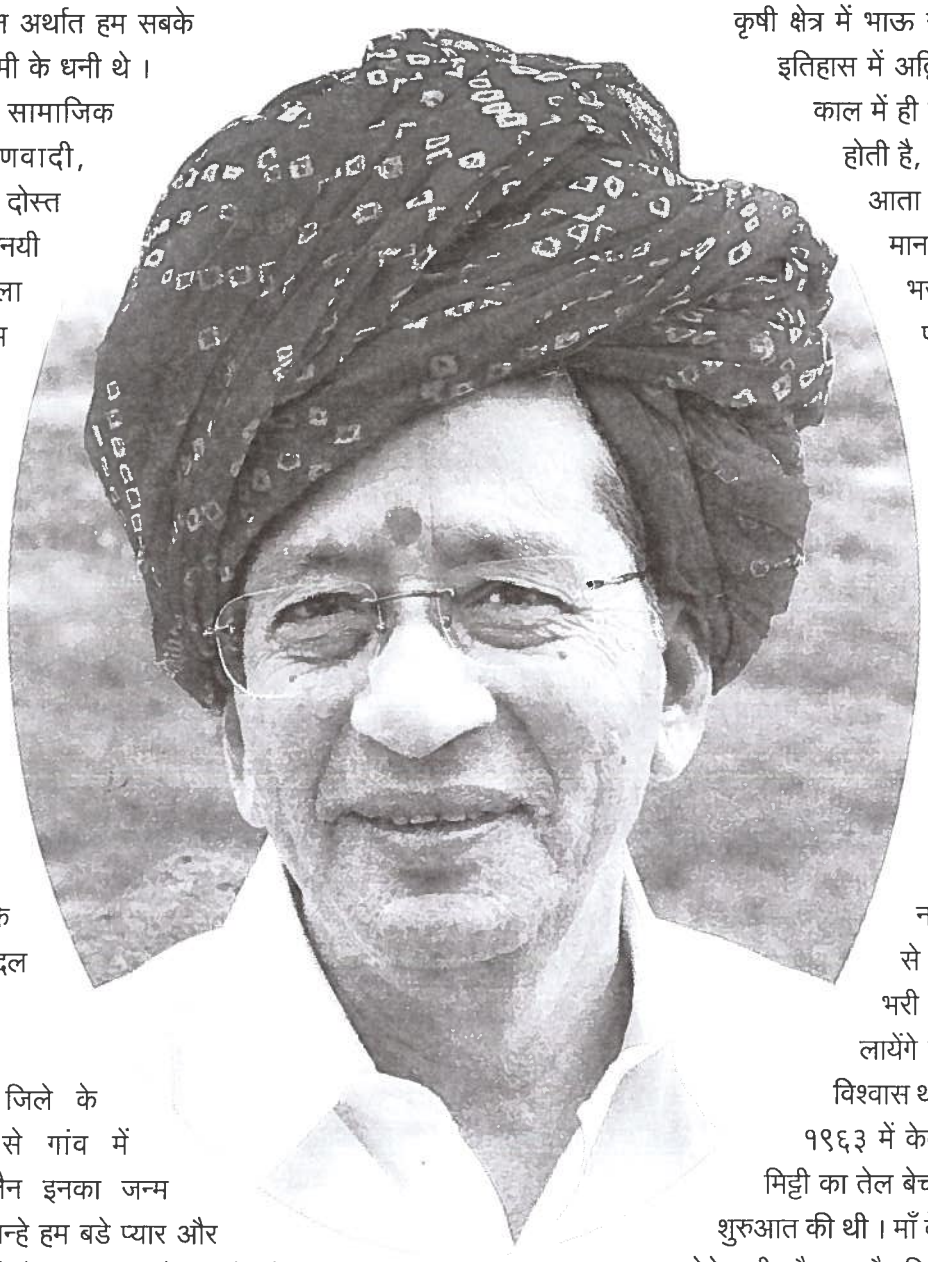

यादे भाऊ की.....

महाराष्ट्र के जलगांव जिले के वाकोद नामक छोटेसे गांव में भवरलाल हिरालाल जैन इनका जन्म १९३७ में हुआ था । जिन्हे हम बडे प्यार और आदरके साथ भाऊ कहते है । हिरालाल जैन वाकोद मे खेती करते थे । वाकोद पिछडा गाव था, जहाँ स्वास्थ्य संबंधी प्राथमिक सुविधा भी उपलब्ध नही थी । लेकिन इस भूमीपुत्रने कठोर मेहनत और समस्याओका सामना करते हुये उच्चविद्या हासिक की । जीवन के हर उतार चढाव में खुद के इरादे बुलंद रखते हुये जैन इरिगेशन सिस्टिम्स लि. इस कंपनी को सिंचाई सामग्री निर्माण करने के क्षेत्र में दुसरे स्थानपर लाकर खडा कर दिया ।

कृषी क्षेत्र में भाऊ ने किया हुआ कार्य देश इतिहास में अद्वितीय ऐसाही है । संकट काल में ही कठोर मेहनत की परीक्षा होती है, जब भी संकत का समय आता था उसे वह उपलब्धी मानते थे । मेहनत पर उनका भरोसा था, उसी के बल पर शुन्य से विश्व निर्माण का भाऊने सपना देखा ओर उसे हकिकत में बदल भी दिया ।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भाऊ को सरकारी नोकरी आसानीसे उपलब्ध थी, लेकिन उस मोह को त्याग कर उन्होने कृषी क्षेत्र का चुनाव किया । दुनिया की ओर देखने का अलग नजरीया था । अपने कार्य से देश के किसानो के दु:ख भरी जिंदगी में अच्छा समय लायेंगे इस बात पर उनका दृढ विश्वास था ।

१९६३ में केवल ७००० रुपये लेकर मिट्टी का तेल बेचने के व्यापार से उन्होने शुरुआत की थी । माँ के विचारोसे प्रेरणा लेकर उन्होने कृषी औजार और किसानोपयोगी वस्तुओं का व्यापार शुरु किया । सिर्फ पैसा शोहरत प्राप्त करने की बजाय किसान और इस धरतीपर रहनेवाले जीवमात्रा के लिए काम करो, इस तरह की सिख माँ की थी । अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त जैन धर्म के इन तत्वो से माँ ने ही उन्हे परिचित कराया था ।

भाऊ एक किसान

भाऊ ने खेती मे पसीना बहाया है, इसलिए वे किसानोके जीवनमान के बारे में वह अच्छी तरह से वाकीफ थे । किसानो के प्रति उनके मन में प्रेम ओर दया हमेशासे थी । खेती पुरक साधनसामग्री और सुविधा इन बातोपर विशेष ध्यान देकर उन्होने कडी मेहनत की । खेती की उपज बढाने में हम सफल हुये तो दुनियाको लगनेवाले अनाज की जरुरत हम पुरी करने में सफल होंगे, भाऊ इसके बारे में हमेशा सोचते थे और कृती भी करते थे ।

शुरुवात के दौर में भाऊ ने खुद का व्यापार बढाने के साथही किसानोकी उपज क्षमता बढे इस हेतू अपनी कंपनी को अन्न संस्करण के क्षेत्र में लेकर गये । भाऊ खेती की तरफ अलगही दृष्टीकोण से देखते थे । इसलिए उन्होने इस क्षेत्र में कुछ नये प्रयोग किये, जैसे की करार शेती । उनकी इन सोचका किसानो को काफी फायदा हुआ । किसानो की उपज क्षमता तो बढ़ी साथही उन्हे बाजार की तुलना में अच्छे दाम भी मिले ।

खेती के क्षेत्र मे भाऊ ने दिया हुआ योगदान एक प्रेरक कहानी के समान ही है । पानी बचाने के लिए उन्होने सिंचाई संबंध नवतंत्रज्ञान को बढावा दिया । सिंचाई तंत्र से खेती की उपज क्षमता बढी, जिसका सीधा असर किसानोकी जिंदगीपर हुआ । उनका जीवनस्तर बेहतर बना । भाऊ सिंचाई तंत्र को यज्ञ की तरह मानते थे । सिंचाई तंत्रज्ञान और अधिक विकसित करने हेतू उन्होने आधुनिक तंत्र का उपयोग किया, जिसका लाभ जैन इरिगेशन कंपनी को भी हुआ । सकारात्मक प्रयोग के कारण कंपनी हमेशा अव्वल स्थानपर रही । सकारात्मकता और परिणामकारकता को देखते हुअे देश के साथ ही दुनिया भर की नजरे सिंचाई सामग्री प्राप्त करने हेतू कंपनी की तरफ आकर्षित हुयी । हर बुंद के साथ जादा उपज यह कंपनीका लिखित संदेश ।

खानदेश का इलाका हमेशासे अकालग्रस्त रहा है । इस क्षेत्र में जलसंधारण, जलरक्षण जैसे कामो को बढावा देनेका काम भाऊने किया । कांताई बांध का निर्माण इसी कार्य में भाऊ का सर्वोच्च योगदान माना जाता है । कांताई बांध महाराष्ट्र के जलपुर्ती क्षेत्र में सबको हमेशा प्रेरणा देता रहेगा । अकाल के समय मे पिने का पानी देनेवाला और खेती का जीवनदान देनेवाला कांताई बांध है । महात्मा गांधीजीकी सोच के अनुसार पिछडे इलाकोकी समस्या दूर करने हेतू उठाया हुआ महत्त्वपूर्ण कदम है ।

खेती के क्षे में भाऊ ने दिये हुये योगदान की हमेशा सराहना की गयी है, इस क्षेत्र में किये हुये कार्य के लिए भाऊ को हमेशा से नवाजा गया है । सिंचाई तंत्र का उपयोग और प्रसार हेतू दिये जानेवाला क्राफड रीड पुरस्कार से अबतक सिर्फ दो आशियाई व्यक्तियों को दिया गया है । हाल ही में भारत में भी भाऊ के कार्य की सराहना की गयी, उन्हे सर्वोच्च पद्मश्री किताब २००८ में प्रदान किया गया । किसानो का हसता हुआ चेहरा यही मेरा सही पुरस्कार है ऐसा माननेवाले भाऊने किसानो को खेती क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित करना शुरु किया । देश और विश्वभर के कृषीतज्ज्ञ, शास्त्रज्ञ द्वारा उन्होने किसानो का प्रशिक्षीत किया ।

खेती और खाद क्षेत्र में नये-नये प्रयोग भाऊने हमेशा किये । अधिक मात्रा में उत्पाद देनेवाली प्रजातीका निर्माण उन्होने अपनी प्रयोगशाला में करवाया । प्याज, अनार, स्टॉबेरी जैसे संस्कारीत पौधो से किसानोको जो फायदा हुआ यह चकाचौध करनेवाला था । भाऊ के ऐसेही क्रांतीकारी प्रयोगोके लिए उन्हे दूरकी सोच रखनेवाला किसानो का नेता ऐसी मान्यता दुनियाभर से मिली.

छोटा-बडा हर किसान एक उद्योजकही है ऐसा भाऊ का मानना था । किसानो को सन्मानपूर्वक अधिक उपज किस तर से होगी इस लिए भाऊ हमेशा प्रयास करते रहे । जिसका लाभ पचास लाख किसानो ने उठाया ।

भाऊ जैसे किसान थे वैसे ही व दूरदृष्टी रखनेवाले उद्योजक भी थे । व्यापार करते वक्त उन्होने कभी अपने तत्वोसे समझोता नही किया । पेट्रोल पंप पर काम करते वक्त ॲग्रीकल्चर ए प्रोफेशन विथ फ्युचर यह वाक्य स्कॉटीश मिशन के रिंग पर उन्होने पढा । भाऊ के दिल में इन शब्दो ने घर कर दिया । पुरे जीवनकाल में भाऊने इन शब्दो के प्रभाव को अपने साथ में रखा । मेहनत करने का जुनून, अनुभवों से मिली सिख और जिद इन तिनो के दम पर अपने सपने साकार करने के लिए भाऊ सक्षम बने । छोटेसे गाव के वह ग्रामीण उद्योजक थे, लेकिन उन्होने अपार मेहनत ओर नया दृष्टीकोन रखते हुअे सातसो करोड की लागत वाली आंतरराष्ट्रीय स्तरकी बडी ओर बेहतरीन कंपनी खडी करदी । कठिण समय में जब आर्थिक समस्या सामने आयी, ऐसे समय में भी उन्होने अपने कर्मचारी, सहकारीयोंको सथा मेही रखा । बल्कि ऐसे समय में भी उन्होने कर्मचारियोको मदत दी । भाऊ को नया तंत्रज्ञान स्वीकारना बडा अच्छा लगता था । नये क्षेत्र का उद्योग शुरु करने में उन्हे दिलचस्पी रहती थी । मात्र दुसरोके व्यसनोपर आधारित उद्योग क्षेत्र में जाना उन्हे कतई मान्य नही था । जिस उद्योग से समाज को फायदा हो, जिससे किसानों का जीवनमान बढे ऐसे उद्योगो में उन्हे दिलचस्पी रही ।

कल्पना छोटी, ब्रह्मांड भेदनेवाली, इस विचारधारा को ग्रहन करने वाली

जैन इरिगेशन कंपनी दुनियाभर में अपने दस हजारसे भी जादा सहकारी और सात करोड की लागत के साथ आगे बढ रही है । यह एक बहुराष्ट्रीय कंपनी है, जिसके दुनियाभर में ३० उत्पादन केंद्र है । इस कंपनी में सुक्ष्म सिंचाई, पीव्हीसी पाईप्स, एचडीपीई पाइप्स, पीव्हीसी शीटस, कृषी उत्पाद संस्करण, उर्जा का पुन इस्तेमाल आदी सेवाये दी जाती है ।

मॅनेजमेंट की शिक्षा देनेवाले दुनियाभर की शिक्षा संस्थाओने भाऊ की कार्यकुशल और बेहतरीन कार्यशैली को नमन किया है । उदाहरण के तौर पर देखे तो हॉवर्ड बिझनेस स्कूल ने जैन इरिगेशन कंपनी का एक विशेष अभ्यास प्रोजेक्ट किया । यह अपनेआप में बहोत बडी बात है । फॉर्च्युन पत्रिका के चेंज द वल्ड २०१५ के संस्करण में दुनिया की ५१ कंपनीयोकी सुची में सातवा स्थान प्राप्त करनेवाली जैन इरिगेशन एकमात्र भारतीय कंपनी हे । अमेरिकाके नेब्रास्का युनिव्हर्सीटीने उनके संशोधन प्रोजेक्ट को भवरलाल हिरालाल जैन-नेब्रासका विद्यापीठ वॉटर फॉर फुड कोलॅबरेटीव्ह प्रोग्राम ऐसा नाम हमेशाके लिए प्रदास किया है ।

भाऊ का समाजसेवक - कार्यकर्ता

भाऊ जिन्होने काम के तरफ कभी मुह नही मोडा। दिल से वह किसी भी काम में खुद को पुरीतरह से झोक दिया करते थे । काम के अलावा दुनियामें दुसरा कोई सुंदर है ही नही ऐसी उनकी मान्यता थी । अपने साथीयों के दिलो में यह बात हमेशा बसी रहे इसलिए भाऊ हमेशा कार्यमग्न रहते थे । शिक्षा भाऊ को पसंद आनेवाला महत्त्वपूर्ण विषय । बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार देनेपर उनका हमेशा जोर रहा । बच्चों की पढाई में पैसा की कमी यह अडचण नही बन सकती, ऐसा वह हमेशा मानते थे । इसी भावनासे प्रेरित होकर उन्होने गरीब और पिछडे बच्चो के लिइ अनुभूती इंग्लिश मिडीयम स्कूल शुरु की । अब इस स्कूल में अनको हुशार एवम् प्रतिभावान बच्चे पढ रहे है । मानो देश का उज्वल भविष्य इस स्कूल में तैयार हो रहा है । अनुभूती स्कूल में आधुनिक शिक्षा पद्धतीका अवलंब किया जाता है ।

भाऊ जैसे संस्कारशील थे, वैसेही उनका वैचारिक अधिष्ठान काफी गहरा था । आनेवाली नयी नस्ल को यह वैचारिक अधिष्ठान प्राप्त हो इसलिए उन्होने गांधी तीर्थ अर्थात गांधी रिसर्च फाऊंडेशन का निर्माण किया । महाराष्ट्र के जलगांव मे ८१ हजार चौ.फुट में निर्माण किया गया खोज गांधी जी की बहुआयामी और मार्गदर्शक संग्रहालय है । राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का जीवनकाल, उनके आदर्श, उन्होने दी हुयी अहिंसा की सिख, आजादी में उनका योगदान, शांती आणि क्षमाशील जीवन का आचरण ऐसे अनेक पैलू उजागर यह गांधी तिर्थ करता है । विश्व का पहला ऑडीओ गाईड संग्रहालयकी मान्यता भी एसे प्राप्त है ।

भवरलाल ॲण्ड कांताबाई जैन फाऊंडेशन द्वारा स्वास्थ्य संबंधी शिवीर लिये जाते है । स्पोर्ट अकॅडमी के माध्यमसे खेल तथा नृत्य, साहित्य, कला आदि क्षेत्र के गुणीजनो को प्रोत्साहित किया जाता है । शिक्षा के क्षेत्र में गुणवानो को पाठ्यवृत्ती दी जाती है । साहित्य क्षेत्र में नये प्रमाण देनेवाले साहित्यिक को कवयित्री बहिणाबाई चौधरी, बालकवी, कविवर्य ना.धो महानोर जैसे सम्मान प्रदान किये जाते है । कांताई नेत्रालय तथा कांताई ग्रंथालय भी शुरु किये गये है ।

पर्यावरणवादी भाऊ

जैन धर्म की मुलधारा पर्यावरणवादी रही है, भाऊने अपने जीवनकाल में पर्यावरण की बढोतरी को सर्वोच्च प्राधान्य दिया । पेड-पौधे, जीवमात्रा के संवर्धन हेतू भाऊ हमेशा सजग रहते थे । हमारी कृतीसे पर्यावरण को कभी हानी ना पहुचे इसलिए वे सदैव प्रयत्नशील थे । इसी बात का प्रमाण हमें उनके द्वारा किये गये कृषी एवं जलसाधारण के कामो में देखने मिलता है ।

धरतीपर उर्जा के स्त्रोत उपलब्ध है । उनकी पहेचा और सही उपयोग करने का गाढा अभ्यास भाऊ ने किया था । इसीलिए सूरज की उर्जा का संचय करके और फोटोव्होल्टिक संच का निर्माण और पानी के पंप्स, गरम पानी के लिए सौर बंब, सौर लाईट के निर्माण को उन्होने प्राधान्य दिया । सौरशक्ती के माध्यमसे चलनेवाली पूर्ण यंत्रणा का उपयोग करके उन्होने जैन हिल्स में हमेशा के लिए सौरउर्जा का स्त्रोत बना दिया । पहले खुद किया फिर लोगो को उन्होने कहा, इस तरह की थी भाऊ की जीवनशैल । उजाड और बंजर जमीन को भाऊ ने कडी मेहनत से पेड और पौधो से हराभरा कर दिया । इस परिवर्तन के लिए उन्होने जो जी-तोड मेहनत की है उसके लिए शब्दो का कोई प्रमाण नही दे सकते । भाऊ की मेहनतसे ही जैन हिल्स माना जैसे स्वर्ग बन गया हो ।

लेखक और वक्त भी

भाऊ का जीवनकाल संघषंपूर्ण और प्रेरक रहा है । अपार मेहनत करने के साथही भाऊ को किताबे पढने में काफी आनंद मिलता था । जीवनकाल में मिला अनुभव ओर किताबोसे मिली सीख के आधारपर उनके पास ढेरसारा ज्ञानभंडार जमा हुआ था । इसीके बलपर उनका भाषण मंत्रमुग्ध करनेवाला होता था । सुननेवालो के दिलो-दिमाग को झंझोडनेकी अनोखी ताकद भाऊ के वकृत्वमे थी । भाऊ के लिइ कोई भी विषय मुश्किल नही था, वह राजकारण, समाज, शिक्षा, कृषी, व्यापार-उद्योग आदि विषयोपर अधिकार वाणी से बोलते थे । अमेरिका

के हॉवर्ड बिझीनेस स्कूल में जब वह आखरीबार गये थे, तब उन्होने एक घंटा भाषण दिया था, जिससे प्रो. ए. गोल्डबर्ग (निवृत्त जॉर्ज एम. मार्फेट, कृषी उद्योग के प्रोफेसर) काफी प्रभावित हुये थे। उन्होने भाऊ को अपना भाई मान लिया था। इन्ही महोदयने बाद में हॉवर्ड बिझनेस स्कूल के संचालक डीन और सहयोगी प्रोफेसरोके साथ जलगाव के जैन इरिगेशन को भेट दी थी। आज हॉवर्ड बिझनेस स्कूल में जैन इरिगेशन कंपनी के प्रोजेक्टपर अध्ययन किया जाता है। भाऊ ने जीवनकाल में मराठी और अंग्रेजी भाषाओं में अनेक किताबे लिखी। २० साल पहले सामाजिक बदलाव के बारे में लिखी हुयी उनकी किताब आजही मार्गदर्शन करती है, यह उनकी दूरदृष्टी का बेहतर उदाहरण है। ॲन एंटरप्रेन्युअ डेसिफर्ड और दी एन्लाईटन्ड आंत्रप्रेन्युअर यह भाऊ की दो किताबे अनुठे मॅनेजमेंट को सबके सामने रखती है।

धर्मपत्नी के साथ बिताये जीवनकाल की घटनाओपर आधारित भाऊने ती आणि मी यह किताब लिखी। जो मराठी, हिंदी और अंग्रेजी तिनो भाषाओं में प्रकाशित हुई। भारतीय संस्कृती और संस्कारीत अखंड कुटूंब संस्था का अनुठा मिश्रण याने ती आणि मी है। आनेवाली नयी पिढी को इस किताब से मार्गदर्शन मिलेगा यह सुनिश्चित है। इस पुस्तक का १८ वा पुनसंस्करण शुरु है। पिछले कुछ सालो में इस किताब की १,२०,००० कापीया बिकी है।

भाऊ जिन्हे मिला बहुजनो का प्रेम

कल्पना छोटी, ब्रह्मांड भेदनेवाली, इस बातको सत्यता प्रदान करनेवाला व्यक्ति याने भाऊ उन्होने करके दिखाया और अपने साथीयों को भी सिखाया। पिछले पाच दशको में सर्वसमावेशकता आणि चिरंतन मुल्योके अधिष्ठानपर उद्योगजगत का साम्राज्य खडा किया। हर छोटा किसान अपने आप में एक उद्योजक रहता है, उसे सम्मानपुर्वक अधिक उत्पादन मिलना चाहिए, ऐसा वह मानते थे। कंपनीसे जुडे पचास लाख किसानो को यह सम्मान मिले इसी सोच में वह हमेशा रहते थे, उसी के लिइ वह अपार कष्ट भी उठाते थे। भगवान ऋषभदेवजी के संस्कारों से भाऊ कृषी क्षेत्र के साधन बने। ऋषी आणि कृषी संस्कृतीने उपासक याने कर्मयोगी भाऊ। उनके दिखाए मार्ग पर चलने की शपथ कंपनीने ली है।

व्यक्तिगत मुल्य और सदाचार इन गुणोपर आधारित उनका जीवन मानो महाकाव्य ही था। सामाजिक दायित्व को मानकर समाज की समस्याओको प्राधान्य देकर उन्होने नैतिक मुल्योके आधारपर महान साम्राज्य का निर्माण किया। भाऊ बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। किसान, उद्योजक, सामाजिक कार्यकर्ता, पर्यावरणवादी, लेखक, जानदेनेवाला दोस्त और असंख्य जीवो को नयी दृष्टी प्रदान करनेवाला संवेदनशील व्यक्ति.

हम सबके जिंदगी को उन्होने ढाला, आकार दिया। जीने के लिइ नया विचार दिया। हमारा जीवन बेहतर बनाने के लिए उनसे हमे जो भी मिला उसके लिइ हम सब कृतज्ञ है। उन्ही के द्वारा दिखाये गये पथपर चलकर हम उनके जैसा जीवनध्येय प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे....!

भवरलाल हिरालाल जैन तथा भाऊ जिन्हे सब प्रेम और आदर से बडे भाऊ कहते थे। २५ फरवरी २०१६ को बिमारी की वजह से उनका देहांत हो गया। शनिवार दि. २७ फरवरी २०१६ की दोपहर ३ बजे जलगांव के जैन हिल्स के प्रांगण में शासकीय सम्मान के साथ भाऊ के पार्थिव पर अग्निसंस्कार किये गये। दुरदृष्टी रखनेवाले महामानव को सबने आसुभरी आँखे और जड अंतकरण से अलविदा किया। भाऊ हमेशा कहते थे यहा ऐसा व्यक्ति विश्रांती ले रहा है, जिसने हमेशा काम करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

पुरस्कार और मानसम्मान

भाऊ को राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय कुल २२ सम्मान प्रदान किय गये। अपने आप में प्रतिष्ठित ऐसा युनेस्को-वेस्ट-नेट का भारताचा जलरक्षक पुरस्कार से उन्हे नवंबर २००७ में सम्मानित किया गया। केंद्र सरकार के जलस्त्रोत विभाग के मंत्री प्रोफेसर सैफ-उद-दिन-सौझ के हाथो दिल्ली में शानदार समारोह में प्रदान किया गया। इस समारोह को जागतिक बँक युनिसेफ, युनेस्को, केंद्रीय, केंद्रीय पाणी आयोग और टेरी के सदस्य उपस्थित थे।

भारत सरकार की ओरसे दिया जाने वाला सर्वोच्च नागरी सम्मान पद्मश्री किताब उन्हे २००८ में प्रदान किया गया। कृषी, उद्योग और सामाजिक क्षेत्र में प्रभावी कार्य करने हेतू उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठा द्वारा डॉक्टर ऑफ लेटर्स इस पदवीसे नवाजा गया। किसानो के लिए सिंचाई सामग्री और सिंचाई योजना, संशोधन के माध्यमसे देशसेवा करने के लिइ राजस्थान के आफॅ सायन्स इस पदवी से सन्मानित किया था।

फोर्बसने उन्हे दी गुड कंपनी ॲवार्ड २०१२ मे देकर सन्मानित किया था। आजतक भाऊ और कंपनी को आंतरराष्ट्रीय १४, राष्ट्रीय १३९, राज्यस्तरीय ४४, राष्ट्रीय स्तर गौरवान्वित संस्था ७४, आंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीयस्तर प्राप्त संस्थाओद्वारा १६ मानांकन, ३ राष्ट्रीय प्रतिष्ठित व्यक्तियोके हाथो गौर। कुल २९० पुरस्कारसे सम्मान।

- साभार : अशोक भाऊ जैन

अशोक भाऊ जैन (ग्रेट भेट)

दैनिक जीवन में आप अनेक लोगों से मिलते है, वार्तालाप करते किंतु एखाध व्यक्तित्व की छाप आप पर, आपके जीवन पर गहरी पड़ती है ऐसी ही भेट आप से शेअर कर रहा हूँ।

भारतीय सिंधू सभा की राष्ट्रीय बैठक तिलदा छत्तीसगढ में मार्च महिने की अंतिम सप्ताह में आयोजित हुई, महाराष्ट्र प्रांत के जलगांव शहर की ओर से मुझे सौभाग्य मिला की अगली राष्ट्रीय प्रतिनिधी सभा अपने जलगांव में आयोजित करने के लिए निवेदित करने का तिलदा की बैठक में प्रस्ताव पारित हुआ अगली बैठक अपने शहर में जलगांव वापसी हुई यहाँ प्रमुख कार्यकर्ताओं से चर्चा हुई। राष्ट्रीय स्तर की बैठक है, स्थान कौनसा होना चाहिए जलगांव का गौरव और हरित क्षेत्र जैन वैली का स्थान सभी के जुबां पर सबसे पहले आया। चर्चा से फिक्स हुआ प्रयत्न करने चाहिइ। श्री. गुरुमुख जगवानी, किशोर बहराणी ने श्रीमान अमर जैन जी से सर्व प्रथम चर्चा कि और पत्र देकर अनुमति प्राप्त की गई। श्रीमान अमर जैन जैन उद्योग समुह पारिवारीक स्नेह रखते है। समुह के प्रमुख श्री. अशोक भाऊ जैन के निकट वर्तीयों में से एक है। उन्ही के अथक परिश्रम से जैन वैली, गांधी तिर्थ स्थल निश्चित हुआ। अब चर्चा की श्री अशोक भाऊ जी से समक्ष भेट एवम् वार्तालाप का अवसर मिले, श्री अमर भाऊ ने वह भी करवाई।

भारतीय सिंधू सभा जलगांव के श्री गुरुमुख जगवानी जी विदेश यात्रा पर थे सो चाह कर भी हम उन्हे साथ में नहीं ले जा सके परंतु उनकी शुभकामनाऐं साथ लेकर गए। श्री. लक्ष्मणदास आडवाणी, डॉ. एम. पी. उदासी, श्री. किशोर बेहराणी, श्री. संजय मंधाण एवम् संजय हिराणी श्री अमर जैन के साथ जैन वैली में श्री अशोक भाऊ के कार्यालय ''हिरा'' में भेट हेतु गए।

एक सफल उद्योग समुह के प्रमुख हमारे दिलो दिमाग में था कि, अत्यंत व्यस्त और कम बोलने वाले केवल मिलेगे। केवल परिचय से हाय-बाय होगी एसी विविध प्रश्न हमारे मन में उठ रहे थे। परंतु हमारे लिए सदैव हृदय में अंकित ऐसी यह मुलाकात और वार्तालाप सदैव रहेगी। भाऊ हृदय जितने वाले व्यक्तिमत्व है, अंत्यत Down to Earth सादगी और सरल स्वभाव के धनी है। ऐसा लग रहा था कि शायद पहली बार हमसे नहीं मिले। सालों के दुसरे परिचित हैं, भेट से पता चला राष्ट्रीय प्रतिनिधी सभा में आने वाले उनके व्यक्तिगत मेहमान हो इस तरह से हर व्यवस्था पर उनकी वैयक्तिक जगह हो, उन्होन निवास, भोजन पर चर्चा को, गुरुकुल निवास, बड़ा हाडां हाल, तथा उन्होने स्वयं होकर परिश्रम कान्फेरस हाल में बैठक लेने पर भी उत्साहित होकर स्वयं कहा की वहा भी सभी आनेवाले अवश्य भेट करें तथा जैन उद्योग समुह की जानकारी प्राप्त करें चर्चा के दौरान कहा। गांधी तिर्थ म्युझियम में अवश्यक भावी सारे लोग सैर करना का आग्रह किया।

चर्चा में उन्होने स्वयं को जलगांव में अपने सिंधी साथीयों को भी याद किया और सिंधी भाषा की थोड़ी सी जानकारी इन्ही सहपाटियों से कॉलेज के दिनों से है, और सभी सहपाटीयों को भी याद किया। भाऊ के स्वभाव से हम जैसे आम व्यक्तियों पर असमान्य छाप पड़ रही थी।

चर्चा में एक और बात की जानकारी मिली। मोठे भाऊ श्रध्देय भंवरलालजी जैन ने उद्योग समुह के किस तरह खडा किया, अशोक भाऊ ने बताया मोठे भाऊ की ऑफीस में तीन तस्वीरे दिवार पर लगी है। एक महात्मा गांधी, जे.आर.डी. टाटा, पंडित नेहरु। अशोक भाऊ ने बताया मोठे भाऊ सदैव इनसे प्रेरणा पाकर उद्योग समुह को खडा किया, नियमों में ढाला है। अशोक भाऊ के शब्दों में जो कि, उन्होने अत्यंत सरल शब्दो में कहे सहज भाव में कहे पर जैन उद्योग समुह उन्हे अपने में उतारा इन्ही शब्दों पर मेहनत की और सारे विश्व में इनका आदर बढ़ा है और जलगांव की भी छाप विश्व पर पड़ी है।

भाऊ ने बताया महात्मा गांधी से सचोटी, जे.आर.डी. टाटा से व्यापार में नियम ओर उसुल। व्यापार में जायज और नाजायज नहीं संस्कृति होती है पर जैन उद्योग समुह जे.आर.डी. टाटा से उच्च प्रामाणिक, सच्चाई और नियमों से व्यापार की प्रेरणा प्राप्त करता है। तथा पंडित नेहरु जी से व्हिजन याने दूरदर्शीता के गुण की प्रेरणा पाते है। इन्ही विचारो के हररोज भाऊ याद करते तथा इसलिए उन्होने यह तस्वीरे अपनी ऑफीस में स्थापित की है। राष्ट्रीय प्रतिनिधी सभा में उन्होने अपनी उपस्थिती के हमारे निवेदन को सहर्ष स्वीकार किया। हमारे लिए और एक आश्चर्य कारक बात सामने आई, अशोक भाऊ से हमने ८ जुलाई के उद्घाटन को अपने पी.ए. या सेक्रेटरी की डायरी नोट करने को कहा तो उन्होने बताया में अपने सारे कार्यक्रम स्वयं नोट करता हू तथा हर रोज स्वयं याद रखता हू और सभी से स्वयं सिधे मुलाकात करता हू।

हर सुबह अपने दैनदिन ॲपाईमेंट एक कागज पर नोट कर ड्राइवर को देता हू तथा उन्हे फालो करता हूँ, ऐसी छोटी-छोटी बातों से कोई भी व्यक्ति महान बनता है। हमें तभी लगा इतने बड़े व्यक्तित्मव के धनी अत्यंत सादगी पूर्ण ओजस्वी वाणी के मालीक परंतु लेश मात्र भी अंहकार या उद्योग समुह के प्रमुख का थोड़ा सा भी अहं उनमें नही दिखा, सही माने में मोठे भाऊ के सारे गुण जैसे अशोक भाऊ ने आत्मसात किए हो, ऐसा प्रतित हुआ।

यह हम सभी के लिए गौरपूर्ण बात है कि, जलगाव शहर में ऐसे व्यक्ति है। धन्य है हम सब जिन्होने उनका सहवास कुछ क्षणों के लिए भी प्राप्त किया है। इसलिए यह भेट ग्रेट भेट थी जिसकी अमीट छाप जीवन प्रर्यत हम सब पर रहेगी।

- संजय हिराणी

सारा विश्व जिसे सदी के महान नायक के रूप में जानता है,
उस अलौकिक पुरुष के 'मोहन से महात्मा' तक के सफर को देखने के लिये आइये!
महात्मा गाँधी के जीवन और कार्यों पर आधारित विश्व का एकमात्र आडियो-गाइडेड संग्रहालय में
रोमांचित कर देनेवाले इतिहास जागरण की अनुभूति के लिये आइये!

आइये... देखिये
गाँधी तीर्थ

ग्रीन बिल्डींग के
सर्वोच्च पुरस्कार
प्राप्त भारत का
पहला संग्रहालय
ग्रीहा-फाईव्ह स्टार
लीड्स-प्लॅटिनम
रेटिंग प्राप्त

- महात्मा गाँधी के जीवन और कार्यों पर आधारित विश्व का एकमात्र आडियो-गाइडेड संग्रहालय
- गाँधी विद्या के क्षेत्र में शिक्षा एवं शोध हेतु भव्य पुस्तकालय तथा अभिलेखागार
- गाँधीजी के रचनात्मक विचाराधारित समाज कार्य स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
- महिला सशक्तीकरण एवं ग्राम विकास कार्यक्रम
- छात्रों व बंदीजनों के लिए 'गाँधी विचार संस्कार परीक्षा' का आयोजन
- शिविर, संगोष्ठियाँ एवं व्याख्यानमालाओं का आयोजन
- लीड इंडिया द्वारा ग्रीन बिल्डिंग प्लैटिनम श्रेणी अवार्ड

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

गाँधी-तीर्थ जैन हिल्स, जलगाँव-४२५००१ (महाराष्ट्र) भारत,
दूरभाष: +९१ २५७ २२६००३३, २२६४८०१, ९४०४९५५३००, ९४०४९५५२२०
इ-मेल: info@gandhifoundation.net; वेबसाइट: www.gandhifoundation.net

जैन इरिगेशन सिस्टीम लि. तथा भवरलाल एवं कांताबाई जैन फाउण्डेशन का संयुक्त उपक्रम

गाँधी तीर्थ संग्रहालय: सुबह ९.३० से शाम ६.०० बजे तक खुला रहता है। (सोमवार बंद)

Mangalani_9326210400